SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
The M. S. University of Baroda

# मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी जीवन का चित्रण

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा.

की

पी-एच० डी० उपाधि के निमित्त प्रस्तुत
शोध प्रबंध

प्रस्तुतकर्त्री

शेख अतिकुन्नीसा एम०

एम० ए०

शोध छात्रा, हिन्दी - विभाग

कला - संकाय, म० स० विश्वविद्यालय - बड़ौदा ।

निर्देशिका :
प्रोफेसर प्रेमलता बाफना
एम० ए०, पी-एच० डी०, साहित्य रत्न
हिन्दी विभाग,
कला - संकाय, म० स० विश्वविद्यालय - बड़ौदा ।

F. W. CS.
Pbafna

F.W.CS
A.M. Dalal
4/12/03
(MISS) ANURADHA DALAL
\D DEPT OF HINDI
:ULTY OF ARTS
S UNIVERSITY OF BARODA
)ODARA

अगस्त - 2003

मुझे हिन्दी विषय अपने स्कूल से ही प्रिय रहा है । यद्यपि मेरी मातृभाषा गुजराती है फिर भी मुझे अपने बाल्यकाल से ही हिन्दी के साथ एक आत्मीयता का अनुभव होता रहा है । इसलिये जब हायर सेकंडरी करने के बाद मैंने कलासंकाय में आगामी अध्ययन करन के लिये दाखला लिया तभी मैंने निश्चित किया था कि मैं हिन्दी विषय के साथ बी० ए० करूँगी । बी० ए० मे हिन्दी विषय में मेरे बहुत अच्छे मार्क्स आये थे । अतः मेरे माता-पिता ने मुझे हिन्दी विषय के साथ ही एम० ए० करने की भी अनुमति दे दी । इसी तरह से एम० ए० करने के बाद मन ने संकल्प किया कि मैं पी-एच० डी० के लिये शोधकार्य करूँ । और मैंने मन ही मन निश्चय किया कि मैं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पर ही कार्य करूँगी । न जाने क्यों मुझे अपने स्कूल जीवन से मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ बहुत अच्छी लगती थी । मैंने अपनी जिज्ञासा आदरणीय बाफना मेडम के सामने रखी । तब उन्होंने बताया कि वैसे तो गुप्तजी पर अनेक शोधकार्य हो चुके हैं किंतु उन्होंने नवजागरण से प्रेरित होकर नारियों का एक विशेष प्रकारे से जो वर्णन किया है, उसे लेकर कार्य किया जा सकता है । मैं अपने मुस्लिम समाज मे भी नारियो की स्थिति देखती तो मुझे लगता था कि सच में ही नारियॉ कितनी उपेक्षित की जाती हैं: इस पुरुष प्रधान समाज में । गुप्तजी ने भी ऐसीही पौराणिक और ऐतिहासिक उपेक्षिताओं को लेकर वर्तमान संदर्भ में उनका वर्णन करते हुए, काव्य रचनाओ का सृजन किया और उस तत्कालीन युग में घर की चारदीवारी में बंद रहने वाली नारियों को उनके द्वारा एक संदेश पहुँचाया । यह सब जब मेरे दिमाग मे आया तब मैंने निश्चय किया कि मैं गुप्तजी द्वारा वर्णित नारी जीवन पर ही शोधकार्य करूँगी । और यही विषय लेकर मैंने अपना पी-एच० डी० का रजिस्ट्रेशन करवाया ।

गुप्तजी प्राचीन हिन्दू पारिवारिक व्यवस्था को ही श्रेष्ठ मानते है और संयुक्त-परिवार व्यवस्था मे विश्वास रखते है । वे स्त्रियों के व्यक्तित्व का आदर और उनमे स्वाभिमान का विकास चाहते थे । नारी भी पुरुष के समान ही सम्मान पाए अतएव वे 'नारी जीवन के यथार्थ चित्रण' पर अधिक बल देते हैं । उन्होंने नारी जीवन की पीड़ा को समझा है, महसूस किया है इसलिए वे नारी ह्रदय का मार्मिक चित्रण कर पाए। सामान्य मनुष्य से कवि हंमेशा दो कदम आगे होता है, उसकी सोचने समझने की संवेदना सामान्य मनुष्य से कहीं अधिक होती है। समाज मे होते परिवर्तन उसके ह्रदय को गहराई के साथ तत्काल स्पर्श करते हैं । महाकवि युग की प्रवृत्ति से प्रभावित होता हे। इसलिए भारतीय नारी की ममता, आत्मयातना, अपमान और ऑसुओ को जितना गुप्तजी समझते है, उतना बहुत कम कवि समझ पाए हैं । गुप्तजी की 'नारी' धरती पर रहनेवाली पग-पग पर यातना भोगती हुई और 'बर्बर पुरुष के तेज़ को अपने उदर मे ढोती हुई नारी का वास्तविक रुप अंकित है'। गुप्तजी वैष्णव कवि होने के नाते

'वैष्णव' सहानुभूति उनकी रचनाओ में देख सकते हैं । उनकी यह सहानुभूति और नारी का आत्मगौरव नारी वर्ग की उन्नति के लिए ही है । गुप्तजी आधुनिक युग के कवि है और आधुनिक युग नारी जागरण का युग है, नवोत्थान का युग है । सांस्कृतिक पुनरुत्-थान के साथ नारी के प्रति अवज्ञा के दृष्टिकोण मे परिवर्तन आया तथा नारी पुरुष के साधना-मार्ग की बाधा नही अपितु, चैतन्य की जीवन्त शक्ति के रुप में प्रतिष्ठित हुई । ग्राईस्थिक गरिमा के साथ नारी के सम्मान मे वृद्धि हुई । रीतिकालीन कवियों की भॉति नारी केवल श्रॅगार-चेतना का माध्यम मात्र नहीं रही और न उसके साधना मार्ग की बाधा ही । नारी नर के समकक्ष आकर खड़ी रही । प्रेरणा देनेवाली शक्ति तथा संसार की रमणीयता की वृद्धि करने में उसका चिरन्तर योग है । नारी के अशिक्षित एवं पंगु व्यक्तित्व के प्रति करुणा व्यक्त की गई, उसके त्याग मे बलिदान का स्तवन किया गया । आधुनिक युग की नैतिक एवं सामाजिक अनिवार्यताएँ नारीपात्रों के माध्यम से अपना प्रतिनिधित्व खोजती है । आधुनित युग मे उर्मिला, कैकेयी, मांडवी, श्रुतिकीर्ति जैसे पात्रों को नया आयाम मिला । आधुनिक कवियोंने इनको न केवल अपनी करुणा एवं सहानु-भूति अर्पित की, बल्कि उनके व्यक्तित्व मे निहित् सौन्दर्य, प्रेम, स्वाभिमान, क्षत्रियत्व, आत्मोसर्ग तथा राष्ट्र-भावना को भी विभिन्न कोणो से उजागर किया । नारी को परंपरित माता एवं पत्नी रुप के साथ-साथ शक्ति तथा विद्रोह की तेजस्विनी प्रतिमूर्ति के रुप मे भी देखा गया । अहल्या, मंथरा, शबरी, शूर्पणखॉ, सुमित्रा और कौशल्या सभी के व्यक्तित्व को परिवर्तित युग संदर्भ के अनुरुप नया संस्कार भी प्राप्त हुआ । महात्मा गांधीजी के अनुसार भारत की नैतिक एवम् आर्थिक प्रगति मे नारी का महत्वपूर्ण योग है । भविष्य निर्मात्री नारी अपनी संतानो पर उत्तम प्रभाव डाल सकती है । चरित्र-निर्माण में योग देने वाली नारी के हाथ में ही भारत की समृद्धि निहित् है । इसलिए उन्होने लिखा है -

" Woman is sacrifice personified, when she does
a thing in the right spirit, she moves mountains." (1)

नवयुवको में और युवतियों में सामूहिक राष्ट्रचेतना को उत्पन्न करने की शक्ति नारी में है। नारी त्याग की साक्षात् मूर्ति है । स्वस्थ मनोदशा मे वह पर्वत को भी हिला सकती है। कहावत है कि नारी अगर चाहे तो नर्क को स्वर्ग भी बना दें और स्वर्ग को नर्क । एक नारी के सत्कर्म से मनुष्य पर्वत के समान महान कष्टो को भी झेल सकता है । इस तरह कवि के विचार में पृथ्वी की समस्त शक्तियों के विकास के लिए नारी पत्नी, माता और सेविका के रुप में अनन्त प्रेरणा देने वाली है ।

---

(1) Woman and Social Injustice - M.Gandhi, P.155

हिन्दी साहित्य जगत में सदीयों से लिखी जानेवाली कविता के अपने रंग-ढंग एवम् माध्यम है । द्विवेदी युग के कवि श्री मैथिलीशरण गुप्तजी की काव्य-प्रतिभा जन्म-जात थी । उनके काव्यगत संस्कार पैतृक देन थी । द्विवेदीजी के मार्गदर्शन में उनका काव्य और भी निखर कर सामने आया । जो कविताएँ गुप्तजी ने लिखी है वह अपने आप में सक्षम है । गुप्तजी के काव्य में प्राचीन, पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथानको का आश्रय लेकर उनमें नवीन उद्‌भावनाएँ जो प्राप्त होती है वह बेजोड़ है । उनके काव्यके विषय में भारतीय संस्कृति की देन हे । उन्होने अपने काव्य मे नारी के चरित्र को हंमेशा उपर उठाने को प्रधानता दी है। वासुदेवशरण अग्रवालजी कहते है कि गुप्तजी के काव्य-मानस की प्रेरणा और प्रवृत्ति सोत चर्तुविध है। अतीत संस्कृति और कला का प्रेम उसका एक अंश है । वर्तमानयुग के प्रति आस्था और राष्ट्रीयता उसका दूसरा चरण है । समक्षजीवन और उसके साथ जुड़ा हुआ कर्ममय प्रवृत्ति-मार्ग या कवि के शब्दों में कहे तो 'गेह-गौरव' उसका तीसरा अंश है। मानव की गरिमा या अनुभव या महिमा के प्रति आस्था और आशा एवं उसी आधार पर नर-नारायण का समन्वय व्यष्टि का समष्टि में पर्यवसान या भागवती परिभाषा में नर-नारायण का समन्वय,यह द्रष्टिकोण उसका चौथा अंश है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को अनुशीलन की द्रष्टि से छः अध्यायों मे विभक्त किया गया है।

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक युग में हिन्दी कविता के सुप्रसिद्ध कवि माने जाते है। स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्र कवि होने का गौरव गुप्तजी को प्राप्त है । **प्रथम अध्याय** में गुप्तजी के जन्म से मृत्यु तक के उनके सीद्धे-सादे जीवन की चर्चा की गई है अर्थात उनका जन्म, वंश-परिचय, बचपन, प्रारंभिक शिक्षा, विवाह-संस्कार, उनकी दिन-चर्या और खान-पान, जीवन और व्यक्तित्व का मूल्यांकन, मृत्यु आदि विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है । गुप्तजी की काव्य यात्रा की इस विशाल कालावधि मे अनेक मौलिक रचनाएँ प्राप्त होती है । महाकाव्य, खण्डकाव्य, आख्यानक काव्य, मुक्तक काव्य, गीतिकाव्य आदि सभी प्रकारकी रचनाओं का समोवेश हुआ है। इन सभी रचनाओं में प्राचीनता और नवीनता का अद्‌भूत संमिश्रण द्रष्टिगत होता है ।

**द्वितीय अध्याय** तत्कालीन परिस्थितियॉ-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, साहित्यिक आदि को लेकर लिखा गया है। उन्नीसवीं शताब्दी का संघर्ष भारतीयों और

अंग्रेजों के बीच का संघर्ष है । भारत में उस समय तक जागरण तथा स्वातंत्र्य की चेनता काफी फैल चुकी थी। महात्मा गांधीजी के नेतृत्व मे भारत देश को आजादी प्राप्त हुई थी । तत्कालीन हिन्दी साहित्य भी गांधी-दर्शन और गांधी विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित हुआ । आलोच्य कवि गुप्तजी के काव्य और जीवन पर भी इन सांस्कृतिक आंदोलनों का गहरा प्रभाव पड़ा है। गुप्तजी ने सत्य और अहिंसा को रामभक्ति के अनुरुप ही ढाला है । उन्होंने मानवता, एकता आदि को प्रधानता दी है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय इतिहास में सांस्कृतिक आंदोलन एवं उनके पुरस्कर्ताओं का अमूल्य योगदान है।

**तृत्तीय अध्याय** मे पूर्ववर्ती काव्य मे नारी जीवन के चित्रण को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है । जिसमें वैदिककाल, आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल तक के कवियो ने नारी की जो प्रधानता प्रस्तुत की है उसका चित्रण है । चूँकि कवि की रचना अपने समयानुसार होती है । भारतीय संस्कृति में समयानुसार नारियो की परिवर्तनशील अवस्था देखने को मिलती है। वैदिककाल में नारी की अवस्था उन्नति की ओर अग्रसर थी, जो आगे चलकर नारी केवल घर की चारदिवारी तक सीमित रह गई। और बीसवी शताब्दी तक आते-आते नारी फिर से अपना सम्मान पा सकी है। आधुनिक कवियो को नारी-भावना के निर्माण की ओर ले जाने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारण है - नवजागरण की चेतना, अंग्रेजी शिक्षा और साहित्य का प्रभाव, मध्यकालीन नारी भावना के प्रति विद्रोह, समाज-सुधार की लहर का प्रभाव, नारी-आंदोलन का प्रभाव, इंडियन नेशनल कांग्रेस और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव । इन सभी ने किसी-न-किसी रुप में परिवर्तन करके उनका दष्टिकोण उदार और व्यापक बनाया है। आधुनिक कवियोंने नारी को न केवल अपनी करुणा एवं सहानुभूमि ही अर्पित की, अपितु उसके व्यक्तित्व में निहित् सौन्दर्य, प्रेम, स्वाभिमान, क्षत्रियत्व, आत्मोत्सर्ग तथा राष्ट्र-भावना को भी विभिन्न कोणों से उजागर किया है।

**चतुर्थ अध्याय** में गुप्तजी के काव्य में नारीजीवन का चित्रण प्रस्तुत किया गया है । प्रबन्ध काव्य, खण्डकाव्य, मूक्तककाव्य आदि में नारी के विविध रुपो का चित्रण मिलता है, जिसका विस्तार से वर्णन किया गया है । गुप्तजी ने नारी की महिमा को रसात्मक अभिव्यक्ति दी और अभिनव क्रान्ति का सर्जन किया है । परिवार का केन्द्र-बिंदु नारी की उपेक्षा और तिरस्कार कवि के लिए असह्य होता है। इसलिए गुप्तजी की नारी चरित्र-प्रधान कृतियों में उर्मिला, सीता, कैकेयी, यशोधरा, विष्णुप्रिया, हिड़िम्बा आदि नारियों की चारित्रिक द्रढ़ता दर्शनीय है । साकेत मे उर्मिला को छोड़ कर लक्ष्मण बनवास चले गए है । जगत् हित के लिए सर्वस्व त्याग करनेवाले पति के

सत्संकल्प पर यशोधरा को गर्व है । साकेत की सीता एक कर्मठ नारी है । पंचवटी की सीता लोक-सेवा मे तन्मय दिखायी पड़ती है । साकेत में कैकेयी के चरित्र में भी नवीनता है । साकेत के प्रथम सर्ग में उर्मिला-लक्ष्मण के सुखी दाम्पत्य जीवन का वर्णन है। यशोधरा में विरहिणी का सघन और तीव्र उच्छ्वास है -

" हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा ?
जिसने अपनाया था, त्यागा:
रहे स्मरण ही आते !" (1)

विरह और विरहजन्य विषाद कितना तीव्र है । उर्मिला की उक्तियों में और भी अधिक तीव्रता है -

"मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी,
मैं बॉध न लूँगी तुम्हें, तजो भय भारी।" (2)

सीता और कौशल्या देवार्चन की सामग्री संजा रही है वहॉ कवि ने सद्गृहस्थी का उज्जवल एवं आदर्श चित्र प्रस्तुत किया है । विरह-मूढ़ उर्मिला को जब कभी अवधि विस्मृत हो जाती है तो वह प्रियतम का आकुल आह्वान करती है - किन्तु स्वप्न में भी यदि वे अपने पास दिखाई दे जाते हे तो वह चौंक कर उठती है और उन्हे जाने के लिए कहती है । वह इसलिए कि अभी चौदह वर्ष पूरे नही हुए । उसे अवधि की पूर्ति से पहले स्वप्न मे भी प्रिय का आगमन असह्य है । जयद्रथ-वध में उत्तरा के विलाप-प्रलाप का मर्मस्पर्शी वर्णन हैं। नववय में ही जिसके पति की मृत्यु हो गई हो, उस रमणी के शोक का क्या ठिकाना? उसे चारों ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई देता है और बेचारी संज्ञा-शून्य हो जाती है। सिद्धराज में जयसिंहमाता मीलनदे सोमनाथ दर्शनार्थ जा रही है । मार्ग मे पता चलता है कि देवदर्शन पर भी राजकर लगा दिया गया है । उसे दु:ख होता है कि उसके पुत्र के राज्य में भगवान की प्रतिमा के दर्शन पर भी कर लगा दिया जाए । राजमाता देव-दर्शन किए बिना लौट पड़ती है। वह कारण पूछने पर कहती है कि मंदिर का द्वार सबके लिए खुलेगा तभी मैं देव-दर्शन करूँगी । राजमाता की अभिलाषा पूर्ण होती है । द्वापर मे विधृता पति की कुचेष्टाओं से परिचित् होने पर भी चुप रहती है । क्योंकि पति की त्रुटियो को सदैव क्षम्य समझती रही है परंतु एक दिन लांछित हो बौखला उठती है और अन्याय न

---

(1) यशोधरा, मै.गुप्त. पृष्ट - 25

(2) साकेत, मै.गुप्त, पृष्ट - 179

सहकर प्राण त्याग देती है । निश्चय ही समाज के वर्तमान विधान मे नारी की स्थिति अत्यंत शोचनीय है । गौतम यथोधरा को सुप्तावस्था में छोड़कर चले गए थे । बताए बिना घर छोडकर उन्होंने उसे अपमानित किया, विश्वासपात्री नहीं समझा । पत्नी के लिए इससे बड़ी लज्जा की बात और क्या हो सकती है । गौतम जब मगध-प्रदेश में आते हैं, राज्यभरमें आनंद की लहर दौड़ जाती है। उसे साथ ले जाने के लिए गौतम के माता-पिता यशोधरा के पास आते हैं पर यशोधारा गमन के लिए प्रस्तुत नही होती और व्यंजना द्वारा अपना आशय बताती है । अन्ततः शुद्धोदन और महाप्रजावती भी मगध जाने का विचार छोड़ देते हैं । गर्विणी यशोधरा उसी कक्ष में प्रतिक्षा करती है जहॉ 'वे' छोड़ गए थे । किन्तु उसका मन उद्वेलित है यदि गौतम यशोधरा के समीप, उसके कक्ष तक आ जाते हैं तो उसकी लाज रह जाती है। जिसने त्यागा था यदि वह स्वयं अपनाले तो उसकी संपूर्ण तपस्या सफल हो जाती है। यदि वह स्वंय दर्शन करने चली जाती है तो आज तक के सारे संयम पर पानी फिर जाएगा । उसके कष्ट व्यर्थ हो जाएँगे । यशोधरा के ह्रदय में प्रवृत्ति और विवेक का यही संघर्ष चल रहा था कि गौतम स्वंय उसके द्वार पर आ जाते है । निश्चय ही यशोधरा की 'बान' रह जाती है, उसका सारा तप-संयम सार्थक होता है । यशोधरा के गौरव की रक्षा होती है । साकेत में कैकेयी-कृत्यों का कवि ने मनोवैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण किया है और उसे मातृत्व-गौरव की स्वीकृति दी है । कैकेयी सारा अपराध अपना ही मानती है और घोर आत्मनिंदा करती है -

"कहते आते थे यही सभी नरदेही,
'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।'
अब कहे सभी यह हाय ! विरुद्व विधाता, -
'है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।' " (1)

फिर भी कैकेयी के मन को चैन नहीं वह तो अपने घोर पाप की शांति के लिए युग-युगो तक धिक्कार सुनना चाहती है। यह कैकेयी के आत्मग्लानि की पराकाष्ठा है। गौतम के महाभिनिष्क्रमण पर यशोधरा दुखी है - किन्तु उनमें उस दुःख की प्रतिच्छाया देखना नहीं चाहती वरन् उनकी सिद्धि की ही कामना करती है । उसे तो आज और भी अधिक भाते है क्योंकि लोक का कल्याण इसी में है । परार्थ और परमार्थ के लिए वह सहर्ष स्वार्थ का त्याग करती है । उर्मिला विरह में भी दूसरों के सुख को देख दुखी नही होती अपितु उन्हे हर्ष-विभोर ही रहने को कहती है । वह अपने अतिरिक्त किसी को भी दुखी देखना नहीं चाहती । पतिव्रत की रक्षा करना भारतीय नारी का

---

(1) साकेत, मै.गुप्त, पृ - 179

आदर्श है । इस आदर्श के निर्वाह मे शची एक भारतीय नारी के रुप मे चित्रित की गई है । शची के चरित्र मे पतिव्रता स्त्री अपने सामर्थ्य से अपना मनोबल एवं मनोधैर्य स्थायी रुप मे रखकर अपने शील एवं चारित्र्य की रक्षा करने में समर्थ सिद्ध होती है। द्रौपदी के चरित्र को गुप्तजी ने जयद्रथ-वध, सैरन्ध्री, युद्ध तथा जय भारती काव्यों में नवीनता का रुप दिया है । कवि ने उसकी धीरता, पुत्रवत्सलता एवं वंशानुक्रमता पर भी पर्याप्त मात्रा में प्रकाश डाला है ।

**पंचम् अध्याय** मे काव्य के कलापक्ष पर विचार विमर्श किया गया है अर्थात भाषा अलंकार, प्रतीक, बिंबविधान, छंदविधान आदि पक्षों पर प्रकाश डाला गया है । वास्तव मे कवि की काव्य भाषा का स्वरुप उसकी अनुभूति के स्वरुप से निर्मित एवं नियंत्रित होता है । काव्य भाषा कवि की अनुभूति, उसके बोध अथवा उसकी संवेदना को ध्वनित करती है । 'परिमल' की भूमिका में निरालाजी ने लिखा है कि मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। आगे उन्होंने लिखा है कि कविता की मुक्ति छंदो के शासन से अलग होने में है। अर्थात् छंदो से मुक्ति के पहले ब्रजभाषा से मुक्त होना जरुरी था। जानवेन ने कहा कि कविता मे नवीनता सबसे पहेले भाषा के स्तर पर ही प्रकट होती है । आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास मे यह नवीनता सबसे पहले मैथिलीशरण गुप्त ने संभव की, फिर निराला ने। मैथिलीशरण गुप्तजी की काव्य भाषा का स्तर सदैव और सर्वत्र एक सा नही है। वे काव्य-भाषा के क्षेत्र मे अनेक स्तरों पर सृजनशील रहे। नितान्त सपाट, सूचना परक और गद्यात्मक भाषा के साथ-साथ लाक्षणिक वैदग्ध्य संपन्न मधुर काव्य भाषा का भी साक्ष्य उन्होंने प्रस्तुत किया। काव्य में भाव एवं रुप सौन्दर्य की प्रतिष्ठा के लिए अलंकारों की योजना होती है। क्योंकि सौन्दर्य की अपेक्षा कवि और पाठक दोनों को होती है। अलंकार काव्य के बाह्य एवं आंतर पक्षों के रमणीयता एवं चमत्कार प्रदान करते हुए, पाठकों अथवा श्रोताओ के निमित्त उसे अत्यंत ही बोधगम्य एवं प्रभावशाली बना देते हैं। गुप्तजी का साहित्य छंद बद्ध है। विशेष रुप से उन्होंने लयात्मक शास्त्रीय छंदो का उपयोग किया है किंतु यशोधरा जैसी कृतियों मे उन्होंने चंपु की पद्धति अपनाई है और 'सिद्धराज' तथा 'विष्णुप्रिया' जैसे ग्रंथो में मुक्तक छंद की रचनाएँ भी प्रणीत की है । साकेत के नवम् सर्ग मे भाव-गीतो की सृष्टि की । 'झंकार' मे छायावादी गीतों की रचना पद्धति अपनाने का असफल प्रयास किया। प्रत्येक कवि युग-विशेष की भाव-स्थिति का कवि होता है । मुहावरें और लोकोक्तियॉ का भी गुप्तजीने अपनी मुक्तक एवं प्रबन्ध दोनों प्रकार की कृतियो मे समुचित प्रयोग किया है ।

**पष्ठम् अध्याय** उपसंहार का है। आलोच्य कवि अत्यंत व्यापक द्रष्टि-संपन्न व्यक्ति है। जीवन में जितनी भिन्न-विभिन्न स्थितियॉ और परिस्थितियॉ संभव है उनमें से अधिकांश को उन्होंने अपने काव्य का विषय बनाया है । आचार्य शुक्ल ने भी कहा है कि पूर्ण भावुक वे ही है जो जीवन की प्रत्येक स्थिति के मर्मस्पर्शी अंश का साक्षात्कार कर सकें और उसे श्रोता या पाठक के सम्मुख अपनी शब्दशक्ति द्वारा प्रत्यक्ष कर सके। गुप्तजी की भाव-परिधि बहुत ही व्यापक है। मैथिलीशरणजी प्रिय और अप्रिय, व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत सभी को अपने काव्य का विषय बनाते हैं । यह उनकी बहुत बड़ी विशेषता है । कॉलरिज तो इसे प्रतिभा का एक लक्षण ही मानते हैं । गुप्तजी स्वभाव से अत्यंत संवेदनशील है। यह संवेदनशीलता ही भावना को शक्ति प्रदान करती है। रेडियों द्वारा महात्मा गांधीजी के निधन के दुखद समाचार सुनते ही 'अरे राम !' कहते कहते स्तब्ध हो गए थे। कल्पना की मनोहरता भावो की सुकुमारता, अनुभूति की सघनता विचारो की गंभीरता और अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता द्वारा उनकी कृतियों को अमरत्व मिलता है । गुप्तजी ऐसे ही स्वनाम-धन्य अमर प्रणेता कवियो मे हैं। उनकी काव्ययात्रा लगभग छः दशको की है । हिन्दी-जगत को अपने कृतित्व की प्रभूत राशि भेट की हैं। द्विवेदीकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। उनकी आरंभिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलनेवाले "वैश्योपकारक" में प्रकाशित होती थी। बाद में इनका परिचय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ और इनकी कविताएँ 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगी। द्विवेदीजी के आदेश और उपदेश तथा स्नेहमय प्रोत्साहन के परिणाम स्वरुप इनकी काव्य-कला में निखार आया । इनकी प्रथम पुस्तक ' रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किन्तु इनकी ख्याति का मूलाधार 'भारत-भारती' (1912) है । 'भारत-भारती' ने हिन्दी-भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएँ प्रबुद्ध कीं और तभी से ये राष्ट्रकवि के रुप में विख्यात हुए। मैथिलीशरण गुप्त प्रसिद्ध रामभक्त कवि थे । इसके साथ ही इन्होने भारतीय जीवन को समग्रता में समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है। 'मानस' के पश्चात् हिन्दी में रामकाव्य का दूसरा स्तंभ मैथिलीशरण कृत 'साकेत' ही है। इन्होंने दो महाकाव्यो और उन्नीस खण्डकाव्यों का प्रणयन किया है। इनका चरित्र-चित्रण-कौशल भी उत्कृष्ट प्रबन्ध-कला का प्रमाण है। गुप्तजीने 'तिलोत्तमा', 'चन्द्रहास' और 'अनघ' नामक तीन नाटक, भी लिखे हैं। किंतु मूलत: वे प्रबन्धकार थे - अतएव अन्य साहित्य-रुपों मे उनकी प्रतिभा को उचित विकास नही मिला। खडी बोली के स्वरुप-निर्धारण और विकास में उनका अन्यतम योगदान हैं। आरंभिक रचना 'जयद्रथ-वध' में भी खडीबोली का सरस-मधुर और प्रांजल रुप मिलता है। मार्क्सवादी समीक्षक डॉ० बच्चन सिंह ने लिखा है कि गुप्तजी के परिवार और परिवेश दोनों पर वैष्णव रंग था। उनके पिता

माधुर्यभाव से उपासना करते थे। गुप्तजी की दीक्षा भी इसी संप्रदाय में हुई थी । उनके परिवेश में जो गांधीवादी विचारधारा परिव्याप्त थी उसका मेरूदण्ड भी वैष्णव भाव ही था। किन्तु जो भक्ति उन्हे विरासत मे मिली उसका वैष्णवपन देशकाल के मेल मे नहीं था। गुप्तजी ने उसे संशोधित कर मर्यादा पुरुषोत्तम को अपना आराध्य बनाया । गुप्तजी का काव्य मर्यादा और संयम की डोर से बंधा हुआ नवजागरण का मंत्र फूँकने में सर्वथा समर्थ सिद्ध हुआ। गुप्तजी ने युग की नवीन चेतना यानी उपेक्षित चेतना को स्वीकार किया । यशोधरा, उर्मिला, कैकेयी और विष्णुप्रिया केवल काव्य और महांकाव्य की ही नायिकाएँ न होकर प्रत्येक युग-युग की उपेक्षित भारतीय नारियों के प्रतिनिध चरित्र है। गुप्तजी की प्रतिबद्धता की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होने जिस; प्रकार उपेक्षित जनसामान्य को कला का नेतृत्व दिया, उसी प्रकार हिन्दी भाषा को भी काव्य और जनभाषा का नेतृत्व देकर वाणी के अच्चासन पर प्रतिष्ठित किया।

मेरे इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने मे मुझे सदैव प्रेरणा, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं स्नेह प्राप्त हुआ है। इस शोध प्रबंध के लेखन कार्य के लिए अनेक विद्धानो के महत्वपूर्ण ग्रंथों से सहायता प्राप्त की है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से पर्याप्त सहायता ली है। उन सभी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मैं विभागाध्यक्ष डॉ० अनुराधाजी दलाल, प्रो० पारुकान्तजी देसाई, डॉ० भगवानदासजी कहार, डॉ० विष्णुप्रसादजी चतुर्वेदी आदि सभी प्राध्यापकों के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से मुझे प्रोत्साहन दिया है। इन सबकी ह्रदय से आभारी हूँ। परिवारजनों मे माता-पिता, भाई-बहन के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनके आत्मीय सहयोग, साथ और सहकार के बिना इस विषम पिरस्थिति मे शोधकार्य को पूर्ण करना असंभव था। सांसारिक संयुक्त परिवार का सुखोपभोग करते हुए अचानक जीवन की गति जैसे रुक गई। ऐसे मेरे स्वर्गीय पतिदेव की प्रेरणा ने ही मुझे यह कार्य पुर्ण करने का सम्बल प्रदान किया। मैं उनके प्रति भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ। विशेष रुप से मैं अपनी छोटी बहन लतिफुन्नीसा के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिसने मेरी जिम्मेदारीयो को स्वयं उठाते हुए मुझे यह कार्य पूर्ण करने में अपूर्व प्रोत्साहन दिया है।

मेरे इस शोध प्रबंध की निर्देशिका आदरणीय प्रो० प्रेमलताजी बाफना की मैं ऋणी हूँ। उनके प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हुँ। उनके आत्मीय सहयोग और स्नेह के बिना मेरा यह कार्य संभव ही न था: जिसे शब्दों में व्यक्त करने में मैं असमर्थ हूँ।

इस शोध कार्य को मैंने यथा साध्य प्रामाणिक रुप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है फिर भी यदि त्रुटियॉ रह गई हो तो उसे मेरी अज्ञानता ही समझकर कृपया क्षमा करे। एवमस्तु।

Sheikh. A. M

**( शेख अतिकुन्नीसा एम०)**

# शोध प्रबंध का प्रारुप

## मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी जीवन का चित्रण

**अध्याय-1** **मैथिलीशरण गुप्तजी के जीवन तथा काव्य-कृतियों का परिचय ।**

**जीवन परिचय** :- प्रस्तावना, जन्म, वंश-परिचय, गुप्तजी का बचपन और आरंभिक शिक्षा, विवाहसंस्कार, दिनचर्या और खान-पान, जीवन और व्यक्तित्व का समग्र मूल्यांकन, मृत्यु ।

**काव्य-कृतियाँ** :- रंग मे भग, जयद्रथ-वध, पद्य-प्रबंध, भारत-भारती, शकुन्तला, तिलोत्तमा, चंद्रहास, पत्रावली, वैतालिक, किसान, अनघ, पंचवटी, स्वदेश-संगीत, हिन्दू, शक्ति, सैरन्ध्री, वन-वैभव, वक-संहार, विकट-भट, गुरुकुल, झंकार, साकेत, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, मंगलघट, आस्वाद, नहुष, कुणालगीत, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, विश्व-वेदना, अजित, प्रदक्षिणा, पृथिवीपुत्र, हिडिम्बा, युद्ध, अंजलि और अर्घ्य, जयभारत, भूमि-भाग, कवि-श्री, राजा-प्रजा, विष्णुप्रिया, रत्नावली, उच्छ्वास।

**अध्याय-2** **तत्कालीन परिस्थितियाँ** :- सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, साहित्यिक - ब्रहमसमाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, ब्रहमविद्या समाज, रामकृष्ण मिशन, लोकमान्य बालगंगाघर तिलक, महायोगी अरविंद, रविन्द्रनाथ टैंगोर, महात्मा गांधी आदि का प्रभाव।

**अध्याय-3** **पूर्ववर्ती काव्य में नारी जीवन का चित्रण** :- वैदिककाल, आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल, नवजागरण की चेतना, अंग्रेजी शिक्षा और साहित्य का प्रभाव, मध्यकालीन नारी भावना के प्रति विद्रोह, समाज-सुधार की लहर का प्रभाव, नारी उत्थान की भावना, इंडियन नेशनल कांग्रेस और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव ।

**अध्याय-4** **गुप्तजी के काव्य में नारी जीवन का चित्रण ।**
**गुप्तजी की काव्य रचनाओं की प्रमुख तथा गौण नारियाँ :-** उर्मिला, सीता, यशोधरा, विष्णुप्रिया, हिडिम्बा, रत्नावली, कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा, श्रुतिकीर्ति, मांडवी, मंथरा, द्रौपदी, गांधारी, कुन्ती, विधृता, रानकदे, उत्तरा, शकुन्तला, मीनलदे, रुपवती, महारानी सिसोदनी, इउडोसिया, सुभद्रा, सुरभि, जेनी, देवकी, शूर्पणखॉ, शची, कांचनमाला आदि।

**अध्याय-5** **काव्य का कलापक्ष :-** भाषा, अलंकार, प्रतीक, बिंबविधान, छंदविधान आदि।

**अध्याय-6** **उपसंहार :-** गुप्तजी के नारी चित्रण का वैशिष्ट्य, उपादेयता तथा महत्व।

**मैथिलीशरण गुप्तजी की काव्य-कृतियाँ की सूची ।**
**सहायक ग्रंथो की सूची ।**
**पत्र- पत्रिकाओं की सूची ।**

**========XXXXX=========**